Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

किशोरा के समाजीकरण पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रभाव

कविता कनौजिया
असि0 प्रो. समाजशास्त्र विभाग उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश।

शोधसारांश– सोशल नेटवर्किंग साइट्स किशोरों को ऑनलाइन पहचान बनाने दूसरों के साथ संवाद करने और सामाजिक नेटवर्क बनाने की अनुमति देता है। किशोर मनोरंजन और आत्म–अभिव्यक्ति के लिए भी सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं और यह प्लेटफार्म किशोरों को वर्तमान घटनाओं से अवगत कराता है व उन्हें भौगोलिक बाधाओं के बीच बातचीत करने और उन्हें स्वस्थ व्यवहार सहित विभिन्न विषयों के बारे में सीखने की अनुमति दे सकते हैं।
मुख्य शब्दः– किशोर, समाजीकरण, सोशल, नेटवर्किंग, साइट्स।

प्रस्तावना– सोशल नेटवर्किंग साइट्स एक ऑनलाइन प्लेटफार्म है। जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने और अन्य उपयोगकर्ता के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने तथा बातचीत करने की अनुमति प्रदान करता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स आमतौर पर एक नये उपयोगकर्ता को उन लोगों की सूची प्रदान करने की अनुमति देता है जिनके साथ वे एक कनेक्शन साझा करते हैं और फिर सूची में लोगों को कनेक्शन की पुष्टि या इंकार की अनुमति देते हैं।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स या सोशल बेवसाइट के रूप में भी जाना जाता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स उपयोगकर्ताओं के विचारों, डिजिटल फोटो और वीडियो, पोस्ट साझा करन और अपने सोशल नेटवर्क के लोगों के साथ ऑनलाइन या वास्तविक दुनिया की गतिविधियों और घटनाओं के बारे में दूसरों को सूचित करने की अनुमति देता है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स समाजीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और सम्बन्ध बनाने में एक मंच प्रदान करते हैं। जैसा की समाजीकरण समाज को आकार देने का प्रयास करता है, सोशल नेटवर्किंग साइट्स हमारे मानदंडों, विश्वासों और संस्कृति की व्याख्या करने के तरीकों को निर्धारित करने का प्रयास करता है। समाजीकरण और सोशल नेटवर्कस मानव मनोविज्ञान में गहराई स निहित है क्योंकि दोनों अपने मूल दर्शकों को प्रभावित करने के लिए मानवतावादी दृष्टिकोण के पहलुओं पर भरोसा करते हैं।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रभाव किशोरावस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण हिस्से तक फैला हुआ है सोशल नेटवर्किंग साइट्स किशोरों व किशोरियों की पहचान के विकास के सम्बंधित कौशल का अभ्यास करने के लिए एक मंच प्रदान करता है इसमें आत्म–प्रस्तुति और आत्म–प्रकटीकरण शामिल है अपनी राय, विश्वास और प्राथमिकताएं साझा करना ।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स –

1. फेसबुक – फेसबुक की शुरूआत साल 2004 में हुई थी आज फेसबुक दुनिया का सबसे बड़ा और पॉपुलर सोशल मीडिया एप्लीकेशन है। पूरी दुनिया से कुल 2.89 बिलियन लोग फेसबुक का इस्तेमाल करते हैं, फेसबुक पर सबसे ज्यादा इस्तेमाल करने वालों की संख्या भारत में है।
2. व्हाट्स एप – साल 2009 में व्हाट्स एप की शुरूआत हुई थी देखते ही देखते यह सबसे ज्यादा पॉपुलर एप बन गया। व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से लोग आसानी से एक दूसरे के

सम्पर्क में रहते हैं आज पूरी दुनिया में व्हाट्सएप 2.5 बिलियन लोग इस्तेमाल करते हैं। साल 2014 में फेसबुक ने व्हाट्सएप को खरीद लिया था।

3. ट्विटर साल 2005 में ट्विटर को लान्च किया गया। इस ऐप की पॉपुलरिटी का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि दुनिया के कई बड़े सैलेब्रिटी इसका इस्तेमाल करते हैं। इस ऐप के माध्यम से आप कम से कम शब्दों में अपनी अधिक बात लोगों तक पहुंचा सकते हो।
4. इंस्टाग्राम – इंस्टाग्राम फोटो शेयरिंग ऐप है साल 2010 में इंस्टाग्राम की शुरूआत हुई और आ यह सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला एप्लीकेशन है। इसमें आप अपने शब्दों के द्वारा ही नहीं बल्कि सुन्दर चित्रों के माध्यम से दुनिया से जुड़ते है। दुनिया भर में 1 बिलियन से भी ज्यादा लोग इस एप्लीकेशन का इस्तेमाल करते हैं।
5. यू–ट्यूब – यूट्यूब की शुरूआत 2005 में वीडियो शेयरिंग प्लेटफार्म के तौर पर हुई थी आज यूट्यूब पर मनोरंजन का सबसे प्रमुख साधन बन गया है 2 बिलियन से भी ज्यादा लोग इसका इस्तेमाल करते हैं।

साशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

1. यह शिक्षा प्राप्त करने का एक अच्छा साधन है।
2. सोशल मीडिया कई सामाजिक मुद्धों के लिए जागरुकता पैदा कर सकता है।
3. ऑनलाइन जानकारी का तेजी से हस्तांतरण होता है।
4. सोशल मीडिया के माध्यम से उपयोगकर्ता की कौशल क्षमता का विकास होता है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

1. सोशल मीडिया का अधिक उपयोग उपयोगकर्ताओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है।
2. उपयोगकर्ता साइबर बुलिंग का शिकार हो सकता है।
3. किशोर इंटरनेट साइट्स पर सक्रिय रहते हैं खासकर सोने के घंटे के दौरान जिससे सोने का कार्यक्रम बाधित होता है।
4. सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से उपयोगकर्ता में अलगाव की भावना आती है।

किशोरो के लिए सोशल मीडिया सबसे प्रभावशाली प्लेटफार्म है जिसके माध्यम से किशोर एक दूसरे से जुड़ने और अपने जीवन को साझा करने की कोशिश करते हैं। किशोर खुद इन प्लेटफार्म को रिश्तों को जोड़ने और बनाये रखने रचनात्मक होने और दुनिया के बारे में अधिक जानने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में वर्णित करते हैं लेकिन उन्हें सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के अधिक नकारात्मक पहलुओं से भी गुजरना पड़ता है।

1. 2010 : सुनीता कुप्पू स्वामी और पी. वी. शंकर नारायण ने अपने जर्नल ''वर्चुअल कम्युनिटीज एंड सोशल नेटवर्किंग'' में बताया है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स जैसे –फेसबुक, माईस्पेस और यू–ट्यूब अधिक से अधिक लोकप्रिय हो रही है।

   सोशल नेटवर्किंग साइट्स की ओर युवा आर्कषित होते हैं इस जर्नल में युवाओं की शिक्षा पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रभाव का पता लगाते हैं। अध्ययन तर्क है, कि सोशल साइटस छात्रों को उनकी पढ़ाई से विचलित करती है। लेकिन बेवसाइट के अच्छे शैक्षणिक सिद्धांतो व शिक्षकों द्वारा उचित पयवेक्षण के आधार पर शिक्षा के लिए उपयोगी हो सकती है।
2. 2011 : कुमार सिंह द्वारा भारत में सामाजिक नेटवर्किंग साइटें : एक सामाजिक नेटवर्क और उसके कार्पोरेट मूल्य प्रस्ताव का प्रसार लिखे गये आर्टिकल में बताया गया है, कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स नामक एक नई घटना हाल के समय अस्तित्व में आई न केवल युवा बल्कि मध्यम आयु वर्ग और बुर्जुग फेसबुक जैसी साइटों के लिए पागल हो रहा है।

जनसंख्या का यह खण्ड जो ऑनलाइन समाजीकरण के मध्यम से एक आभासी नेटवर्क पर खुद को दुनिया के बाकी हिस्सों को जोड़ता है साल दर साल कई गुना बढ़ रहा है बाकी दुनिया के साथ हर समय जुड़े रहने के लिए।

3. 2012 : मार्गम मधुसूदन द्वारा प्रकाशित पेपर का मुख्य उद्वेश्य यह जानना है कि दिल्ली विश्वविद्यालयों के शोद्यार्थियों ने शोधकार्य के लिए दैनिक संचार में सोशल नेटवर्किंग साइटस को कैसे एकीकृत किया। एक संरचित प्रश्नावली तैयार की गई और 160 उत्तरदाताओं को व्यक्तिगत रूपसे वितरित किया गया। अधिकांश ने गुप्त रूप से सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रयोग किया जबकि कुछ ने ऐसी साइटों का उपयोग किसी शोध को बढ़ावा देने के लिए किया। इसके अलावा ज्यादातर उत्तरदाताओं ने शैक्षणिक उद्धेश्यों के लिए सोशल नेटवर्किंग साइट्स फेसबुक और रिसर्चमैन को प्राथमिकता दी। सोशल नेटवर्किंग साइट्स सहयोगात्मक और साथी समूह लर्निंग के सामान्य लाभ थे जबकि कुछ ने साइबर अपराध और गोपनीयता के बारे में चिंता व्यक्त की।
4. 2012 : डॉ. के.पी. सिंह द्वारा लिखी गई पुस्तक Use of networking sites in India-Practices Prospectives and Problem. में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग भारत में विशेष रूप से शैक्षणिक वातावरण के विभिन्न दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए लिखी गई है। पुस्तक में सोशल नेटवर्किंग साइटस से संबंधित विभिन्न पहलुओं की भी चर्चा की गयी है जैसे सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपकरण, तकनीकी, उद्वेश्य सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रकार व महत्त्व व कार्यक्रम और सोशल नेटवर्किंग साइट्स के क्षेत्र में उपयोग किये जाने वाले शब्दों की व्यापक शब्दावली कुछ उपयोगी सूची के साथ प्रदान की गयी है।
5. 2013 : अनिल कुमार व राजेन्द्र कुमार द्वारा महिर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक भारत के स्नातकोत्तर छात्रों और शोद्यार्थियों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रयोग करने की गतिविधियों और कारणों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। चयनित आबादी के बीच एक स्व–संरचित प्रश्नावली वितरित की गई और प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गये प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और परिणाम स्वरूप यह पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं को जागरुक होना चाहिए। शोध के दौरान यह भी पता चला कि सभी नेटवर्किंग साइटों के बीच छात्रों और शोद्यार्थियों में फेसबुक लोकप्रिय साइट है।
6. 2014 : इंगोर पेंटिक ने अपने आर्टिकल ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग और मानसिक स्वास्थ्य के दौरान पाया कि सोशल नेटवर्किंग ने लोगों के संचार करने और बातचीत करने के तरीके में गहरा बदलाव किया है। अध्ययन के दौरान प्राप्त निष्कर्ष के परिणाम स्वरूप पाया गया कि फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स का लम्बे समय तक उपयोग अवसाद के संकेतों और लक्षणों से संबंधित हो सकता है। कुछ लेखकों ने बताया कि नेटवर्किंग साइट्स की गतिविधियों आत्मसम्मान से जुड़ी हो सकती है ज्यादातर बच्चों और किशोरों में।
7. 2015 : यह शोध उत्तर भारत के विश्वविद्यालयों के छात्रों और शोद्यार्थियों के बीच सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग पर एक प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण था। सर्वेक्षण 610 प्रश्नावली के नमूने पर आधारित था जिसमें से 486 प्रश्नावली प्राप्त हुई व जिनकी प्रतिक्रिया दर 79.67 प्रतिशत थी अध्ययन से पता चला की उत्तरदाताओं की सभी श्रेणियों द्वारा फेसबुक सबसे लोकप्रिय साइट है व इसका उपयोग ज्यादातर मनोरंजन व संचार के लिए किया जाता है।

8. 2016 : नवभारत टाइम्स के एक आर्टिकल में सोशल मीडिया के चलते किताबों से दूर जा रहे स्टूडेन्ट में सोशल मीडिया के जमाने में व्हाटस एप और फेसबुक का स्टूडेन्ट पर बुरा असर पड़ रहा है नतीजन स्टूडेंट्स किताबों से दूर जा रहे हैं पुस्तक जगत के लिए सोशल मीडिया बड़ी चुनौती बनकर उभरा है।
9. 2018 : पश्चिम बंगाल के महानगरीय शहर सिलीगुडी में स्थित अंग्रेजी माध्यम स्कूल में चुने गये 388 छात्रों द्वारा एक पहले से परिक्षण किया गया और पूर्व डिजाइन की गई प्रश्नावली को गुमनाम रूप से स्वप्रकाशित करके आंकड़ों का विश्लेषण किया गया परिणाम में पाया गया कि 338 (87.1 प्रति) छात्रों ने सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग किया और इन नेटवर्को पर अधिक समय बिताया।
10. 2018 : जी अमृता मालतेश और चन श्री अपने जर्नल 'किशोरों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने का उद्वेश्य और प्राथमिकता' को जानने के लिए किया गया था। अध्ययन कार्योत्तर अनुसंधान डिजाइन का उपयोग करते हुए हैदराबाद और सिकंदराबाद जुड़वा शहरों में आयोजित किया गया था। सेंपिल में 18 से 20 वर्ष की आयु के 200 किशोर शामिल थे जो पेशेवर और गैर पेशेवर डिग्री पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर रहे थे निष्कर्ष स्वरूप फेसबुक को प्रथम स्थान दिया गया था और यह यूट्यूब और ट्विटर के बाद सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली साइट है। यह अध्ययन यह समझने में मददगार साबित हुआ कि किशोरों द्वारा नेटवर्किंग साइटों का उपयोग सामाजिक बुराईयों पर जागरूकता पैदा करने और ज्ञान उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है।
11. 2020 : कोविड 19 के दौरान किशोरों में इंटरनेट के उपयोग और पलायनवाद के प्रभाव का अध्ययन करने से पता चला कि किशोरों और युवाओं को विकासात्मक विशेषताओं से निपटने के साथ–साथ महत्वपूर्ण तनाव सहना पड़ा है। अध्ययन का उद्धेश्य किशोरों में इंटरनेट क उपयोग पर लॉकडाउन के प्रभाव की जाँच करना व महामारी से पहले उनकी आदतों की तुलना करना था।

निष्कर्ष – सोशल नेटवर्किंग साइट्स किशोरों को ऑनलाइन पहचान बनाने दूसरों के साथ संवाद करने और सामाजिक नेटवर्क बनाने की अनुमति देता है। किशोर मनोरंजन और आत्म–अभिव्यक्ति के लिए भी सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं और यह प्लेटफार्म किशोरों को वर्तमान घटनाओं से अवगत कराता है व उन्हें भौगोलिक बाधाओं के बीच बातचीत करने और उन्हें स्वस्थ व्यवहार सहित विभिन्न विषयों के बारे में सीखने की अनुमति दे सकते हैं।

आज की सोशल मीडिया संस्कृति किशोरो को पहचान बनाने के लिए आवश्यक उनकी वांछित स्वीकृति प्राप्त करने के लिए पर्याप्त साधन प्रदान करती है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के बारे में अधिकांश समस्याओं का मुख्य स्त्रोत उपयोगकर्ता की समझ की कमी है निःसंदेह सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है, आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर क सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हजारों लोगों तक पहुँचा सकता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युवाओं की शिक्षा पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव पड़ता है।

संदर्भग्रन्थ सूची

1. (2019), सोशल मीडिया पर निबन्ध http://theindianwire.com
2. टीनएजर पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव http://news24.7.com

3. (2016, अक्टूबर 12) सोशल मीडिया के चलते किताबों से दूर जा रहे स्टूडेंट http://navbharattimes.com
4. निर्देशिका, फर्रूखाबाद, भारत 27 जनवरी 2021
5. भारत की जनगणना फर्रूखाबाद 21 अक्टूबर 2019
6. भाटिया, कविता 2021ः सोशल मीडिया : वर्चुअल से वास्तविक सेतु प्रकाशन
7. मलतेश, अर्मताजी धनश्री, के. (2018) किशोरों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने का उद्वेश्य और प्राथमिकता 6(2), 193–196
8. पेंटिक इगोर (2014) ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग और मानसिक स्वास्थ्य 17(10), 652–657 https://doi.org/10.1089/cyber.1.10.0070
9. मधूसूदन मार्गम (2013) दिल्ली विश्व विद्यालय के शोधार्थियों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग : एक अध्ययन 44(2) 100–113
10. कुप्पू, स्वामी, सुनीता, नारायण, पी.के. शंकर 2010 वर्चुअल कम्यूनिटीस एड सोशल नेटवर्किंग 2(1) https://doi:10.4018/JVCSN.2010010105
11. कुमार, अनिल, कुमार राजिंदर (2013) सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग महिर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, भारत का एक अध्ययन 1000
12. सिंह, के.पी. गिल मलकित सिंह 2015 सोशल नेटवर्किंग साइट्स के लिए भूमिका और उपयोगकर्ताओं का दृष्टिकोण : उत्तर भारत के विश्वविद्यालयों का एक अध्ययन
13. राज, मेधा भट्टाचार्य जी शर्मिष्ठ मुखर्जी अभिजीत (2018) सिलीगुड़ी पश्चिम बंगाल भारत के स्कूलों छात्रों के बीच ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग साइटों का उपयोग। 40 (5) 452–457
14. सैनी, नीरू सांगवान, गरिमा वर्मा, मधुर कोहली, आदर्श कौर, मनमीत, लक्ष्मी, पी वी एम (2020) सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रभाव उत्तर भारत के एक शहर से एक कास सेक्शनल अध्ययन।
15. फर्नांडीस ब्लासम, विश्वास, जमींदार, मनसुखानी रोसेन टैन, कैसरिन आत्मा, पैलेजी, एस्सी सेसिलिया ए (2020) किशोरो में इंटरनेट के उपयोग और पलायनवाद पर Covid-19 लाकडॉउन का प्रभाव 7(3), 59–65
16. सिंह कुमार, आलोक 2011
17. जगवाल, डॉ. ऐनी सामपाल शोभना 2021 A study on influence of social networking sites on adolscents in jammu (orange book publication)